नमक का दारोगा- मुंशी प्रेमचंद

1. पंडित अलोपीदीन का लक्ष्मीजी पर अखंड विश्वास था । वह कहा करते थे कि संसार का तो कहना ही क्या, स्वर्ग में भी लक्ष्मी का ही राज्य है । उनका यह कहना यथार्थ ही था । न्याय और नीति सब लक्ष्मी के ही खिलौने हैं , इन्हें वह जैसा चाहती है, नचाती है । लेटे ही लेटे गर्व से बोले - चलो, हम आते हैं । यह कह कर पंडित जी ने बड़ी निश्चिंतता से पान के बीड़े लगाकर खाए । फिर लिहाफ़ ओढ़े हुए दारोगा के पास आकर बोले - बाबूजी, आशीर्वाद ! कहिए, हमसे ऐसा कौन - सा अपराध हुआ कि गाड़ियाँ रोक दी गई । हम ब्राह्मणों पर तो आपकी कृपा दृष्टि रहनी चाहिए । वंशीधर रुखाई से बोले- सरकारी हुक्म !

प्रश्न 1. लक्ष्मी जी के बारे में पंडित जी का क्या विश्वास था ?

प्रश्न 2. वंशीधर द्वारा उनकी गाड़ियाँ क्यों पकड़ी गई थी ?

प्रश्न 3. वर्तमान युग में लक्ष्मी जी के प्रति समाज की क्या धारणा है ?

2. उनके पिता एक अनुभवी पुरुष थे । समझाने लगे - बेटा ! घर की दुर्दशा देख रहे हो । ऋण के बोझ से दबे हुए हैं । लडकियाँ हैं, वह घास-फूस की तरह बढ़ती चली जाती हैं । न मालूम कब गिर पड़ूँ । अब तुम्हीं घर के मालिक- मुख्तार हो । नौकरी में ओहदे की और ध्यान मत देना ।, यह पीर का मज़ार है । निगाह चादावे और चादर पर रखनी चाहिए । ऐसा काम ढूँढना जहाँ कुछ ऊपरी आय हो । मासिक वेतन तो पूरनमासी का चाँद है जो एक दिन दिखाई देता है और घटते-घटते लुप्त हो जाता है । ऊपरी आय बहता हुआ स्रोत है जिससे सदैव प्यास बुझती है । वेतन मनुष्य देता है, इसी से उसमें वृद्धि नहीं होती । ऊपरी आमदनी ईश्वर देता है, इसीसे उसमें बरकत होती है, तुम स्वयं विद्वान हो, तुम्हें क्या समझाऊँ । इस विषय में विवेक की बड़ी आवश्यकता है ।

प्रश्न 1. मुंशी वंशीधर के पिता ने घर की स्थिति को क़िस प्रकार वर्णित किया है ?

प्रश्न 2. पूर्णमासी का चाँद किसे कहा गया है और क्यों ?

प्रश्न 3. ऊपरी आमदनी क़िस प्रकार की व्यवस्था की ओर संकेत करती है ? क्या आप मुंशी जी की राय से सहमत हैं ?

3. किन्तु अदालत में पहुँचने की देर थी । पंडित अलोपीदीन इस अगाध वन के सिंह थे अधिकारी वर्ग उनके भक्त, अमले उनके सेवक, वकील-मुख्तार उनके आज्ञापालक और अरदली. चपरासी तथा चौकीदार तो उनके बिना दाम के गुलाम थे । उन्हें देखते ही लोग चारों तरफ से दौड़े । सभी लोग विस्मित हो रहे थे । इसलिए नहीं कि अलोपीदीन ने क्यों यह कर्म किया बल्कि इसलिए कि वह क़ानून के पंजे में कैसे आए । ऐसा मनुष्य जिसके पास असाध्य साधन करनेवाला धन और अनन्य वाचालता हो, वह क्यों कानून के पंजे में आए । प्रत्येक मनुष्य उनसे सहानुभूति प्रकट करता था । बड़ी तत्परता से इस आक्रमण के निमित्त वकीलों की सेना तैयार की गई । न्याय के मैदान में धर्म और धन में युद्ध ठन गया । वंशीधर चुपचाप खड़े थे । उनके पास सत्य के सिवा न कोई बल था, न स्पष्ट भाषण के अतिरिक्त कोई शस्त्र । गवाह थे, किन्तु लोभ से डाँवाडोल ।

प्रश्न 1. वन का अगाध सिंह किसे कहा गया है और उनकी क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?

प्रश्न 2. वकीलों की सेना किस उद्देश्य से तैयार की गई ?

प्रश्न 3. वंशीधर की स्थिति कैसी थी और क्यों ?

4. वंशीधर ने धन से बैर मोल लिया था, उसका मूल्य चुकाना अनिवार्य था। कठिनता से एक सप्ताह बीता होगा कि मुअत्तली का परवाना आ पहुँचा। कार्य-परायणता का दंड मिला। बेचारे भग्न हृदय, शोक और खेद से व्यथित घर को चले। बूढ़े मुंशीजी तो पहले ही से कुड़बुड़ा रहे थे कि चलते-चलते इस लड़के को समझाया था, लेकिन इसने एक न सुनी। सब मनमानी करता है। हम तो कलवार और कसाई के तगादे सहें, बुढ़ापे में भगत बनकर बैठें और वहाँ बस वही सूखी तनख्वाह! हमने भी तो नौकरी की है और कोई ओहदेदार नहीं थे। लेकिन काम किया, दिल खोलकर किया और आप ईमानदार बनने चले हैं। घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दिया जलाएँगे। खेद ऐसी समझ पर! पढ़ना-लिखना सब अकारथ गया।

प्रश्न 1. धन से बैर मोल लेने से क्या तात्पर्य है ? उसका क्या मूल्य चुकाना पड़ा ?

प्रश्न 2. वृद्ध मुंशीजी ने अपने बेटे को क्या समझाया था ?

प्रश्न 3. घर में चाहे अँधेरा हो, मस्जिद में अवश्य दिया जलाएँगे।' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

मियाँ नसीरुद्दीन – कृष्णा सोबती

1. मियाँ नसीरुद्दीन ने पंचहज़ारी अंदाज़ से सिर हिलाया - ' निकाल लेंगे वक्त थोड़ा, पर यह तो कहिए, आपको पूछना क्या है ? फिर घूरकर देखा और जोड़ा -'मियाँ, कहीं अखबारनवीस तो नहीं हो? यह तो खोजियों की खुराफ़ात है। हम तो अखबार बनानेवाले और अखबार पढ़नेवाले- दोनों को ही निठल्ला समझते हैं। हाँ-कामकाजी आदमी को इससे क्या काम है । खैर, आपने यहाँ तक आने की तकलीफ़ उठाई ही है तो पूछिए-क्या पूछना चाहते हैं ?' 'पूछना यह था कि किस्म-किस्म की रोटी पकाने का इल्म आपने कहाँ से हासिल किया?

प्रश्न 1. मियाँ नसीरुद्दीन ने किस काम के लिए वक्त निकलने की बात कही है ?

प्रश्न 2. मियाँ नसीरुद्दीन के पंचहज़ारी अंदाज़ से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न 3. अखबार पढ़नेवालों और बनाने वालों के बारे में आपकी क्या राय है ?

2. मियाँ कुछ देर सोच में खोए रहे । सोचा पकवान पर रोशनी डालने को हैं कि नसीरुद्दीन साहिब बड़ी रुखाई से बोले -'यह हम न बतावेंगे । बस, आप इत्ता समझ लीजिए कि कहावत है न कि खानदानी नानबाई कुँए में भी रोटी पका सकता है । कहावत जब भी गढ़ी गई हो, हमारे बुजुर्गों के करतब पर ही पूरी उतरती है ।'
मज़ा लेने के लिए टोका -'कहावत यह सच्ची भी है कि....।'
मियाँ ने तरेरा -'और क्या झूठी है ? आप ही बताइए, रोटी पकाने में झूठ का क्या काम ! क्या पकती देखी है कभी ! रोटी जनाब पकती है आँच से समझे !'

प्रश्न 1. मियाँ नसीरुद्दीन ने किस प्रश्न के संदर्भ में कहा कि- 'यह हम न बतावेंगे' ?
प्रश्न 2. 'खानदानी नानबाई कुँए में भी रोटी पका सकता है' - से क्या आशय है ?
प्रश्न 3. मियाँ नसीरुद्दीन द्वारा अपने पेशे के बारे में क्या दावा किया गया ? क्या आप इस दावे से सहमत हैं ?

3. 'अजी साहिब क्यों बाल की खाल निकलने पर तुले हैं !' कह दिया न कि बादशाह के यहाँ काम करते थे - सो क्या काफी नहीं ?'
हम खिसयानी हंसी हँसे - 'है तो काफ़ी, पर ज़रा नाम लेते तो उसे वक्त से मिला लेते ' ।

'वक्त से मिला लेते - खूब ! पर किसे मिलते जनाब आप वक्त से ?- मियाँ हँसे जैसे हमारी खिल्ली उड़ाते हों ।

'वक्त से वक्त को किसने मिलाया है आज तक ! खैर-पूछिए- किसका नाम जानना चाहते हैं ? दिल्ली के बादशाह का ही ना ! उनका नाम कौन नहीं जानता- जहाँपनाह बादशाह सलामत ही न !'

प्रश्न 1. बाल की खाल निकलने की बात किस संदर्भ में हो रही है ?

प्रश्न 2. लेखिका वक्त से किसे मिला कर देखना चाहती है ? मियाँ नसीरूदीन इस के बारे में क्या तर्क देते हैं ?

प्रश्न 3. मियाँ नसीरुद्दीन बादशाह का नाम क्यों नहीं बता पाए ?

4. मियाँ नसीरुद्दीन ने आँखों के कंचे हम पर फेर दिए। फिर तरेरकर बोले- 'क्या मतलब? पूछिए साहब- नानबाई इल्म लेने कहीं और जाएगा? क्या नगीनासाज़ के पास? क्या आईनासाज़ के पास ? क्या मीनासाज़ के पास ? या रफ़ूगर, रँगरेज़ या तेली-तंबोली से सीखने जाएगा ? क्या फरमा दिया साहब-यह तो हमारा खानदानी पेशा ठहरा। हाँ, इल्म की बात पूछिए तो जो कुछ भी सीखा, अपने वालिद उस्ताद से ही। मतलब यह कि हम घर से न निकले कि कोई पेशा अख्तियार करेंगे । जो बाप-दादा का हुनर था वही उनसे पाया और वालिद मरहूम के उठ जाने पर आ बैठे उन्हीं के ठीये पर !'

प्रश्न 1. पेशे का चुनाव किस आधार पर किया जाना चाहिए मियाँ नसीरुद्दीन द्वारा खानदानी पेशा चुनने का क्या कारण रहा होगा ?

प्रश्न 2. मियाँ नसीरुद्दीन की बातचीत से उनके किस व्यवहार का पता चलता है ?

प्रश्न 3. इल्म (हुनर) सीखने के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ती है या किताबी शिक्षा के लिए ?

अपू के साथ ढाई साल - सत्यजित रे

1. पैसों की कमी के कारण ही बारिश का दृश्य चित्रित करने में बहुत मुश्किल आई थी। बरसात के दिन आए गए, लेकिन हमारे पास पैसे नहीं थे, इस कारण शूटिंग बंद थी। आखिर जब हाथ में पैसे आए, तब अक्टूबर का महीना शुरु हुआ था। आखिर जब हाथ में पैसे आए, तब अक्टूबर का महीना शुरु हुआ था।

शरद ऋतु में, निरभ्र आकाश के दिनों में भी शायद बरसात होगी, इस आशा से मैं अपू और दुर्गा की भूमिका करने वाले बच्चे, कैमरा और तकनीशियन को साथ लेकर हर रोज़ देहात में जाकर बैठा रहता था। आकाश में एक भी काला बादल दिखाई दिया, तो मुझे लगता था कि बरसात होगी । मैं इच्छा करता, वह बादल बहुत बड़ा हो जाए और बरसने लगे।

प्रश्न 1.लेखक को बारिश के दृश्य के फिल्मांकन में किस प्रकार की कठिनाई झेलनी पडी ?
प्रश्न 2.लेखक को प्रकृति के किस सहयोग की अपेक्षा थी ?और इसके लिए उन्हें क्या करना पड़ता था ?
प्रश्न 3. 'अपू के साथ ढाई साल' पाठ में लेखक को फ़िल्म निर्माण में पैसे की समस्या के अलावा किन समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

2. उस सीन के बाकी अंश की शूटिंग हमने उसके अगले साल शरद ऋतु में , जब फिर से वह मैदान काशफूलों से भर गया, तब की। उसी समय रेलगाड़ी के भी शॉट्स लिए। लेकिन रेलगाड़ी के इतने शॉट्स थे कि एक रेलगाड़ी से काम नहीं चला। एक के बाद एक तीन रेलगाड़ियों का इस्तेमाल किया। सुबह से लेकर दोपहर तक कितनी रेलगाड़ियाँ उस लाइन पर से जाती है- यह पहले ही टाइम-टेबल देखकर जान लिया था। हर एक ट्रेन एक ही दिशा से आने वाली थी। जिस स्टेशन से वे रेलगाड़ियाँ आने वाली थी, उस स्टेशन पर हमारी टीम के अनिल बाबू थे। रेलगाड़ी स्टेशन से निकलते समय अनिल बाबू भी इंजिन-ड्राईवर की केबिन में चढ़ते थे। क्योंकि गाड़ी के शूटिंग की जगह के पास आते ही बॉयलर में कोयला डालना ज़रूरी था, ताकि काला धुआँ निकले। सफ़ेद काशफूलों की पृष्ठभूमि पर अगर काला धुआँ नहीं आया, तो दृश्य कैसे अच्छा लगेगा ?

प्रश्न 1. रेलगाड़ी के दृश्य को फिल्माते समय लेखक ने शूटिंग कब की तथा क्यों ?

प्रश्न 2. दृश्य को आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए लेखक ने क्या किया ?

प्रश्न 3. अनिल बाबू कहाँ रुके थे ? वे इंजन ड्राईवर के केबिन में क्यों चदते थे ?

3. हमें एक ऐसा सीन लेना था, लेकिन मुश्किल यह कि यह कुत्ता कोई हॉलीवुड का सिखाया हुआ नहीं था । इसलिए यह बताना मुश्किल ही था कि वह अपू- दुर्गा के साथ भागता जाएगा या नहीं । कुत्ते के मालिक से हमने कहा था, 'अपू-दुर्गा जब भागने लगते हैं, तब तुम अपने कुत्ते को उन दोनों के पीछे भागने के लिए कहना' । लेकिन शूटिंग के वक्त दिखाई दिया कि वह कुत्ता मालिक की आज्ञा का पालन नहीं कर रहा है । इधर हमारा कैमरा चालू ही था । कीमती फ़िल्म ज़ाया हो रही थी और मुझे बार- बार चिल्लाना पड़ रहा था -'कट्-कट् !'

अब यहाँ धीरज रखने के सिवा दूसरा उपाय नहीं था । अगर कुत्ता बच्चों के पीछे दौड़ा, तो ही वह उनका पालतू कुत्ता लग सकता था । आखिर मैंने दुर्गा से अपने हाथ में मिठाई छिपाने के लिए कहा, और वह कुत्ते को दिखा कर दौड़ने को कहा । इस बार कुत्ता उनके पीछे भागा, और हमें हमारी इच्छा के अनुसार शॉट मिल गया ।

प्रश्न 1. लेखक को कैसा सीन लेना था और उसमे क्या कठिनाई सामने आ रही थी ?

प्रश्न 2. फिल्मों में पशुओं के इस्तेमाल के लिए उन्हें काफी कठोर प्रशिक्षण दिया जाना क्या उनके प्रति अत्याचार नहीं है ? तर्क सहित उत्तर दीजिए ।

प्रश्न 3. लेखक ने अपनी इच्छानुसार शॉट लेने के लिए क्या युक्ति अपनाई ?

4. रासबिहारी एवेन्यू की एक बिल्डिंग में मैंने एक कमरा भाड़े पर लिया था, वहाँ पर बच्चे इंटरव्यू के लिए आते थे । बहुत-से लड़के आए, लेकिन अपू की भूमिका के लिए मुझे जिस तरह का लड़का चाहिए था, वैसा एक भी नहीं था । एक दिन एक लड़का आया । उसकी गर्दन पर लगा पाउडर देख कर मुझे शक हुआ। नाम पूछने पर नाज़ुक आवाज़ में वह बोला - 'टिया' । उसके साथ आए उसके पिताजी से मैंने पूछा,'क्या अभी-अभी इसके बाल कटवाकर यहाँ ले आए हैं ? वे सज्जन पकडे गए । सच छिपा नहीं सके बोले,"असल में यह मेरी बेटी है । अपू की भूमिका मिलने की आशा से इसके बाल कटवाकर आपके यहाँ ले आया हूँ ।"

प्रश्न 1. बच्चों का इंटररव्यू कौन ले रहा था और क्यों ?

प्रश्न 2. फ़िल्मकार को किस बात का शक हुआ और इसका क्या उत्तर मिला ?

प्रश्न 3. जीवन में कुछ पाने के लिए झूठ का सहारा लेना क्या ठीक है ? क्या कभी आपको भी ऐसा करना पड़ा ?

विदाई संभाषण - बालमुकुन्द गुप्त

1. बिछड़न-समय बड़ा करुणोत्पादक होता है । आपको बिछड़ते देखकर आज हृदय में बड़ा दुख है । माई लॉर्ड ! आपके दूसरी बार इस देश में आने से भारतवासी किसी प्रकार प्रसन्न न थे । वे यही चाहते थे कि आप फिर न आवें । पर आप आए और उससे यहाँ के लोग बहुत दुखित ही हुए । वे दिन-रात यही मनाते थे कि जल्द श्रीमान यहाँ से पधारें । पर अहो ! आज आपके जाने पर हर्ष की जगह विषाद का अनुभव होता है । इसी से जाना कि बिछड़न-समय बड़ा करुणोत्पादक होता है, बड़ा निर्मल और बड़ा कोमल होता है । वैर-भाव छूट कर शांत रस का आविर्भाव होता है ।

प्रश्न 1. बिछड़न समय को कैसा बताया गया है और क्यों ?

प्रश्न 2. भारतवासी किसके दूसरी बार आने से दुखित हुए ? उनके दुख का कारण क्या था ?

प्रश्न 3. वैर-भाव छूटकर शांत रस का आविर्भाव होने से क्या तात्पर्य है ?

2. इस बार बम्बई में उतरकर माई लॉर्ड आपने जो इरादे ज़ाहिर किए थे, ज़रा देखिए तो उनमें से कौन-कौन से पूरे हुए ? आपने कहा था कि यहाँ से जाते समय भारतवर्ष को ऐसा कर जाऊँगा कि मेरे बाद आने वाले बड़े लाटों को वर्षों तक कुछ करना न पड़ेगा, वे कितने ही वर्षों सुख की नींद सोते रहेंगे । किन्तु बात उल्टी हुई । आपको स्वयं इस बार बचैनी उठानी पड़ी है और इस देश में जैसी अशांति आप फैला चले हैं, उसके मिटने में आपके पद पर आने वालों को न जाने कब तक नींद और भूख हराम करना पड़ेगा । इस बार आपने अपना बिस्तरा गरम राख पर रखा है और भारतवासियों को गरम तवे पर पानी की बूंदों की भांति नचाया है । आप स्वयं भी खुश न हो सके और यहाँ की प्रजा को सुखी न होने दिया, इसका लोगों के चित्त पर बड़ा ही दुख है

प्रश्न 1. लॉर्ड कर्ज़न किन इरादों के साथ भारत आया था और क्या वे पूरे हो पाए ?

प्रश्न 2. दूसरों के लिए दुख की स्थितियाँ पैदा करने के बदले लॉर्ड साहब को क्या कीमत चुकानी पड़ी ?

प्रश्न 3. 'आपने अपना बिस्तरा गरम राख पर रखा है और भारतवासियों को गरम तवे पर पानी की बूंदों भांति नचाया है ।'-पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

3. क्या आँखें बंद करके मनमाने हुक्म चलाना और किसी की कुछ न सुनने का नाम ही शासन है ? क्या प्रजा की बात पर कभी कान न देना और उसको दबाकर उसकी मर्जी के विरुद्ध जिद्द से सब काम किए चले जाना ही शासन कहलाता है ? एक काम तो ऐसा बतलाइए, जिसमें आपने जिद्द छोड़ कर प्रजा की बात पर ध्यान दिया हो । कैसर और ज़ार भी घेरने-घोटने से प्रजा की बात सुन लेते हैं पर आप एक मौका तो बताइए, जिसमें किसी अनुरोध या प्रार्थना सुनने के लिए प्रजा के लोगों को आपने अपने निकट फटकने दिया हो और उनकी बात सुनी हो । नादिरशाह ने जब दिल्ली में कत्लेआम किया तो आसिफशाह के तलवार गले में डालकर प्रार्थना करने पर उसने कत्लेआम उसी दम रुक दिया । पर आठ करोड़ प्रजा के गिड़गिड़ाकर विच्छेद न करने की प्रार्थना पर आपने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया । इस समय आपकी शासन अवधि पूरी हो गई है तथापि बंग-विच्छेद किए बिना घर जाना आपको पसंद नहीं है ! नादिर से भी बढ़कर आपकी जिद्द है ।

प्रश्न 1.प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर बताइए कि प्रजा की बात सुनने की बजाय किसने मनमाने हुक्म चलाए और इसका क्या परिणाम हुआ ?

प्रश्न 2. कैसर और ज़ार से किसकी तुलना की गई है और क्यों ?

प्रश्न 3. नादिर से भी बड़ी जिद्द किसकी है और शासन चलाने के लिए किस प्रकार की पद्धति होनी चाहिए ?

4. “अभागे भारत ! मैंने तुझसे सब प्रकार का लाभ उठाया और तेरी बदौलत वह शान देखी जो इस जीवन में असंभव है। तूने मेरा कुछ नहीं बिगाड़ा; पर मैंने तेरे बिगाड़ने में कुछ कमी न की। संसार के सबसे पुराने देश ! जब तक मेरे हाथ में शक्ति थी, तेरी भलाई की इच्छा मेरे जी में न थी। अब कुछ शक्ति नहीं है, जो तेरे लिए कुछ कर सकूँ। पर आशीर्वाद करता हूँ कि तू फिर उठे और अपने प्राचीन गौरव और यश को फिर से लाभ करें। मेरे बाद आने वाले तेरे गौरव को समझे।” आप कर सकते है और यह देश आपकी पिछली सब बातें भूल सकता है, पर इतनी उदारता माई लॉर्ड में कहाँ ?

प्रश्न 1.संसार के सबसे पुराने देश भारत को अभागा क्यों कहा गया है ? और उससे किसने लाभ उठाया ?

प्रश्न 2. भारत के पुराने गौरव और यश की पुन: प्राप्ति कैसे संभव है ?

प्रश्न 3. प्रस्तुत गद्यांश के आधार पर लॉर्ड कर्ज़न की कैसी छवि बनती है ?

गलता लोहा - हिमांशु जोशी

1. मोहन के प्रति थोड़ी- बहुत ईर्ष्या रहने पर भी धनराम प्रारम्भ से ही उसके प्रति स्नेह और आदर का भाव रखता था । इसका एक कारण शायद यह था कि बचपन से ही मन में बिठा दी गई जातिगत हीनता के कारण धनराम ने कभी मोहन को अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं समझा बल्कि वह इसे मोहन का अधिकार समझता रहा था । बीच-बीच में मास्टर त्रिलोक सिंह का यह कहना कि मोहन एक दिन बहुत बड़ा आदमी बन कर स्कूल का और उनका नाम ऊंचा करेगा, धनराम के लिए किसी तरह की गुंजाइश ही नहीं रखता था ।

और धनराम ! वह गाँव के दूसरे खेतिहर या मजदूर परिवारों के लड़कों की तरह किसी प्रकार तीसरे दर्जे तक ही स्कूल का मुँह देख पाया था ।

प्रश्न 1. धनराम मोहन के प्रति कैसा भाव रखता था और क्यों ?
प्रश्न 2. मास्टर त्रिलोक सिंह ने मोहन के बारे में क्या भविष्यवाणी कर रखी थी ?
प्रश्न 3. बच्चों द्वारा पढाई छोड़ देने के कोइ दो प्रमुख कारण बताइए ।

2. औसत दफ़्तरी बड़े बाबू की हैसियत वाले रमेश के लिए मोहन को अपना भाई-बिरादर बतलाना अपने सम्मान के विरुद्ध जान पड़ता था और उसे घरेलू नौकर से अधिक हैसियत वह नहीं देता था, इस बात को मोहन भी समझने लगा था । थोड़ी-बहुत हीला-हवाली करने के बाद रमेश ने निकट के ही एक साधारण से स्कूल में उसका नाम लिखवा दिया । लेकिन एकदम नए वातावरण और रात-दिन के काम के बोझ के कारण गाँव का वह मेधावी छात्र शहर के स्कूली जीवन में अपनी कोई पहचान नहीं बना पाया । उसका जीवन एक बंधी-बँधाई लीक पर चलता रहा । साल में एक बार गर्मियों की छुट्टी में गाँव जाने का मौक़ा भी तभी मिलता जब रमेश या उसके घर का कोई प्राणी गाँव जाने वाला होता वरना उन छुट्टियों को भी अगले दर्जे की तैयारी के नाम पर्व उसे शहर में ही गुज़ार देना पड़ता था ।

प्रश्न 1. अपनी बिरादरी का हवाला देकर गाँव से लेकर शहर लाने वाला रमेश मोहन का परिचय किस रूप में करवाता था और क्यों ?
प्रश्न 2. गाँव का मेधावी छात्र होने के बावजूद मोहन शहर के स्कूल में अपनी पहचान बनाने में सफल नहीं हो पाया, क्यों ?
प्रश्न 3. क्या आप गर्मियों की छुट्टियों में कहीं जाते हैं ? यदि हाँ ,तो कहाँ ? और यदि नहीं तो क्यों ?

3. इस बार मास्टर त्रिलोक सिंह ने उसके लाए हुए बेंत का उपयोग करने की बजाय ज़बान की चाबुक लगा दी थी, 'तेरे दिमाग में तो लोहा भरा है रे ! विद्या का ताप कहाँ लगेगा इसमें ?' अपने थैले से पांच-छह दरांतियां निकल कर उन्होंने धार लगाने के लिए पकड़ा दी थीं ।किताबों की विद्या का ताप लगाने की सामर्थ्य धनराम के पिता की नहीं थी । धनराम हाथ-पैर चलाने लायक हुआ ही था कि बाप ने उसे धौंकनी फूँकने या सां लगाने के कामों में उलझाना शुरू कर दिया और फिर धीरे-धीरे हथौड़े से लेकर घन चलाने की विद्या सिखाने लगा । फ़र्क इतना ही था कि जहाँ मास्टर त्रिलोक सिंह उसे अपनी बेंत चुनने की छूट दे देते थे वहीं गंगाराम इसका चुनाव स्वयं करते थे और ज़रा-से गलती होने पर छड़, बेंत, हत्था जो भी हाथ लग जाता उसी से अपना प्रसाद दे देते । एक दिन गंगाराम अचानक चल बसे तो धनराम ने सहज भाव से उनकी विरासत संभाल ली और आस-पड़ोस के गाँव वालों को याद ही नहीं रहा वे कब गंगाराम के आफर को धनराम का आफर कहने लगे ।

प्रश्न 1. धनराम के पिता के पास 'किताबों की विद्या का ताप' लगाने का सामर्थ्य न होने से से क्या तात्पर्य है ?

प्रश्न 2. मास्टर त्रिलोक सिंह किसे बेंत चुनने के लिए कहते थे ? क्या आपको भी कभी ऐसी स्थिति से गुज़ारना पड़ा है ?

प्रश्न 3. पढ़ाने की बजाय अपने बेटे को मारने के पीछे पिता गंगाराम की किस मजबूरी का पता चलता है ?

4. मोहन कुछ देर तक उसे काम करते हुए देखता रहा फिर जैसे अपना संकोच त्यागकर उसने दूसरी पकड़ से लोहे को स्थिर कर लिया और धनराम के हाथ से हथौड़ा लेकर नपी-तुली चोट मारते, अभ्यस्त हाथों से धौंकनी फूँककर लोहे को दुबारा भट्टी में गरम करते और फिर निहाई पर रखकर उसे ठोकते-पीटते सुघड़ गोले का रूप दे डाला।

मोहन का यह हस्तक्षेप इतनी फुर्ती और आकस्मिक ढंग से हुआ था कि धनराम को चूक का मौका ही नहीं मिला। वह अवाक् मोहन की ओर देखता रहा। उसे मोहन की कारीगरी पर उतना आश्चर्य नहीं हुआ जितना पुरोहित खानदान के एक युवक का इस तरह के काम में, उसकी भट्टी पर बैठकर, हाथ डालने पर हुआ था। वह शंकित दृष्टि से इधर-उधर देखने लगा।

प्रश्न 1. मोहन धनराम के आफर पर क्यों गया था और धनराम क्या कर रहा था ?

प्रश्न 2. मोहन के बारे में धनराम क्या सोचता था ? और उसे मोहन के किस काम से आश्चर्य हुआ ?

प्रश्न 3. जो काम धनराम नहीं कर पा रहा था वह मोहन कैसे कर पाया ?

स्पीति में बारिश - कृष्णनाथ

1. स्पीति हिमाचल प्रदेश के लाहुल-स्पीति जिले की तहसील है लाहुल -स्पीति का यह योग भी आकस्मिक ही है इनमे बहुत योगायोग नहीं है ऊँचे दर्रों और कठिन रास्तों के कारण इतिहास में भी कम रहा है अलंघ्य भूगोल यहाँ इतिहास का एक बड़ा कारक है अब जबकि संचार में कुछ सुधार हुआ है तब भी लाहुल - स्पीति का योग प्राय: ' वायरलेस सेट ' के जरिए है जो केलंग और काजा के बीच खडकता रहता है फिर भी केलंग के बादशाह को भय लगा रहता है कि कहीं काजा का सूबेदार उसकी अवज्ञा तो नहीं कर रहा है ? कहीं बगावत तो नहीं करने वाला है ? लेकिन सिवाय वायरलेस सेट पर सन्देश भेजने के वह कर भी क्या सकता है ? वसंत में भी 170 मील जाना-आना कठिन है शीत में प्राय: असंभव है ।

प्रश्न १. स्पीति कहाँ स्थित है और इसकी क्या विशेषता है ?
प्रश्न २. इतिहास में स्पीति का वर्णन क्यों कम रहा है ?
प्रश्न ३ .केलंग के बादशाह को किस बात का भय रहता है ?

2. स्पीति नदी के साथ-साथ मेरा थोडा परिचय स्पीति के पहाड़ो का भी है | स्पीति के पहाड़ लाहुल से ज्यादा ऊँचे , नंगे और भव्य है | इनके सिरों पर स्पीति के नर - नारियों का आर्तनाद जमा हुआ है | शिव का अट्टहास नहीं , हिम का आर्तनाद है | ठिठुरन है | गलन है | व्यथा है |

इस व्यथा की कथा इन पहाड़ो की उंचाई के आंकड़ो में नहीं कही जा सकती | फिर भी जो सुन्दरता इंच में मापने के अभ्यासी हैं वे भला पहाड़ को कैसे बख्श सकते है | वे यह जान ले कि स्पीति मध्य हिमालय की घाटी है | जिसे वे हिमालय जानते है - स्केटिंग , सौन्दर्य प्रतियोगिता , आइसक्रीम और छोले भठूरे का कुल्लू मनाली , शिमला , मसूरी , नैनीताल श्रीनगर वह सब हिमालय नहीं है | हिमालय का तलुआ है |

प्रश्न -१ स्पीति के पहाड़ प्रसिद्ध पहाड़ों से कैसे अलग है ?
प्रश्न -२ 'यहाँ शिव का अट्टहास नहीं ,हिम का आर्तनाद है '-आशय स्पष्ट कीजिए ।
प्रश्न -३ लोग प्राय: हिमालय किसे जानते हैं और इसकी क्या विशेषताएँ है?

३ मैं ऊँचाई के माप के चक्कर में नहीं हूँ । न इनसे होड़ लगाने के पक्ष में हूँ । वह एक बार लोसर में जो कर लिया सो बस है। इन ऊँचाइयों से होड़ लगाना मृत्यु है। हाँ, कभी - कभी उनका मान- मर्दन करना मर्द और औरत की शान है। मैं सोचता हूँ कि देश और दुनिया के मैदानों से और पहाड़ों से युवक युवतियाँ आएं और पहले तो स्वयं अपने अहंकार को गलाएँ- फिर इन चोटियों के अहंकार को चूर करें। उस आनंद का अनुभव करें जो साहस और कूवत से यौवन मे ही प्राप्त होता है। अहंकार का ही मामला नहीं है। ये माने की चोटियाँ बूढ़े लामाओं के जाप से उदास हो गयी है। युवक युवतियाँ किलोल करे तो यह भी हर्षित हो। अभी तो इन पर स्पीति का आर्तनाद जमा हुआ है। वह इस युवा अट्टहास की गर्मी से कुछ तो पिघले। यह एक युवा निमंत्रण है।

प्रश्न- १. लेखक युवक- युवतियों को किसलिए स्पीति बुलाना चाहता है ?
प्रश्न -२. यौवन का आनंद क्या है ? लेखक युवकों को किस चीज का निमंत्रण देता है ?
प्रश्न -३. लेखक की दृष्टि में स्पीति की उदासी तोड़ने का क्या उपाय है ?

४ यह पावस यहाँ नहीं पहुँचता है। कालिदास की वर्षा की शोभा विंध्याचल मे है। हिमाचल की इन मध्य की घाटियों मे नहीं है। मै नहीं जानता कि इसका लालित्य लाहुल - स्पीति के नर नारी समझ भी पायेंगे या नहीं वर्षा उनके संवेदन का अंग नहीं है। वह यह जानते नहीं है कि 'बरसात मे नदियाँ बहती है, बादल बरसते, मस्त हाथी चिंघाड़ते है, जंगल हरे- भरे हो जाते है, अपने प्यारों से बिछुड़ी हुई स्त्रियाँ रोती - कलपति है, मोर नाचते है और बंदर चुप मारकर गुफाओं मे जा छिपते है।'

अगर कालिदास यहाँ आकर कहें कि 'अपने बहुत से सुंदर गुणों से सुहानी लगने वाली , स्त्रियों का जी खिलाने वाली, पेड़ों की टहनियों और बेलों की सच्ची सखी तथा सभी जीवों का प्राण बनी हुई वर्षा ऋतु आपके मन की सब साधें पूरी करें' तो शायद स्पीति के नर - नारी यही पूछेंगे कि यह देवता कौन है? कहाँ रहता है? यहाँ क्यों नहीं आता?

स्पीति मे कभी कभी बारिश होती है। वर्षा ऋतु यहाँ मन की साध पूरी नहीं करती। धरती सूखी, ठंडी और वंध्या रहती है।

प्रश्न -१ .स्पीति के लोग क्या नहीं जानते और क्यों ?
प्रश्न -२ .कालिदास ने वर्षा ऋतु का कैसा वर्णन किया है ?
प्रश्न -३ .स्पीति की जलवायु कैसी है ?

रजनी- मन्नू भंडारी

1. हाँ ! कॉपी लौटाते हुए कहा था कि तुमने किया तो अच्छा है पर यह तो हाफ- इयरली है .... बहुत आसान पेपर होता है इसका तो | अब अगर इयरली मैं भी पूरे नंबर लेने हैं तो तुरंत ट्यूशन लेना शुरू कर दो | वरना रह जाओगे | सात लड़कों ने तो शुरू कर भी दिया था | पर मैंने जब मम्मी-पापा से कहा, हमेशा बस एक ही जवाब(मम्मी की नक़ल उतारते हुए) मैथ्स में तो तू वैसे ही बहुत अच्छा है, क्या करेगा ट्यूशन ले कर ? देख लिया अब ? सिक्स्थ पोजीशन आई है मेरी | जो आज तक कभी नहीं आई थी |

प्रश्न -१.अध्यापक ने अच्छे अंक लाने के लिए अमित को क्या कहा ?
प्रश्न -२.अमित की मम्मी ने गणित का ट्यूशन न लगाने के लिए क्या तर्क दिया ?
प्रश्न -३.परीक्षा में कम अंकों के लिए कौन जिम्मेदार है ?

2. देखो, तुम मुझे फिर गुस्सा दिला रहे हो रवि.... गलती करने वाला तो है ही गुनहगार, पर उसे बर्दाश्त करने वाला भी कम गुनहगार नहीं होता जैसे लीला बहिन और कान्ति भाई और हजारों-हजारों माँ-बाप | लेकिन सबसे बड़ा गुनहगार तो वह है जो चारों तरफ अन्याय, अत्याचार और तरह - तरह की धांधलियों को देख कर भी चुप बैठा रहता है, जैसे तुम

(नक़ल उतारते हुए) हमें क्या करना है, हमने कोई ठेका ले रखा है दुनिया का | (गुस्से और हिकारत से) माई फुट (उठ कर भीतर जाने लगती है | जाते-जाते मुड़कर)तुम जैसे लोगों के कारण ही तो इस देश में कुछ नहीं होता, हो भी नहीं सकता ! (भीतर चली जाती है)।

प्रश्न - १ प्रस्तुत संवाद में वक्ता व श्रोता कौन है ? और वक्ता गुस्से में क्यों है ?
प्रश्न -२.इस गद्यांश में किस -किस को गुनहगार बताया गया है और क्यों ?
प्रश्न -३.कैसे लोगों के कारण देश में परिवर्तन नहीं हो पाता ?

3. (एकाएक जोश में आकर) आप भी महसूस करते हैं ना ऐसा ? ..... तो फिर साथ दीजिये हमारा | अखबार यदि किसी इश्यू को उठा ले और लगातार उस पर चोट करता रहे तो फिर वह थोड़े से लोगों की बात नहीं रह जाती | सबकी बन जाती है .... आँख मूंद कर नहीं रह सकता फिर कोई उससे | आप सोचिए जरा अगर इसके खिलाफ कोई नियम बनता है तो (आवेश के मारे जैसे बोला नहीं जा रहा है |) कितने पेरंट्स को राहत मिलेगी.... कितने बच्चों का भविष्य सुधर जायेगा, उन्हें अपनी मेहनत का फल मिलेगा, माँ-बाप के पैसे का नहीं, ... शिक्षा के नाम पर बचपन से ही उनके दिमाग में यह तो नहीं भरेगा कि पैसा ही सब कुछ है..... वे... वे...

प्रश्न -१.रजनी किस काम के लिए अखबार वालों की मदद लेना चाहती है ?
प्रश्न -२ वर्तमान जीवन में समाचार पत्रों की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए ।
प्रश्न -३ .रजनी के अनुसार ट्यूशन रोकने के क्या लाभ हैं ?

4. बड़ा अच्छा लगा जब टीचर्स की ओर से भी एक प्रतिनिधि ने आ कर बताया कि कई प्राइवेट स्कूलों में तो उन्हें इतनी कम तनख्वाह मिलती है कि ट्यूशन न करें तो उनका गुजारा ही न हो | कई जगह तो ऐसा भी है कि कम तनख्वाह देकर ज्यादा पर दस्तखत करवाए जाते हैं | ऐसे टीचर्स से मेरा अनुरोध है कि वे संगठित होकर एक आन्दोलन चलाएँ और इस अन्याय का पर्दाफाश करें (हॉल में बता हुआ पति धीरे से फुसफुसाता है, लो, अब एक और आन्दोलन का मसाला मिल गया, कैमरा फिर रजनी पर) इसलिए अब हम अपनी समस्या से जुडी सारी बातों को नजर में रखते हुए ही बोर्ड के सामने यह प्रस्ताव रखेंगे कि वह ऐसा नियम बनाये (एक-एक शब्द पर जोर देते हुए) कि कोई भी टीचर अपने ही स्कूल के छात्रों का ट्यूशन नहीं करेगा | (रूककर) ऐसी स्थिति में बच्चों के साथ जोर- जबरदस्ती करने, उनके नंबर काटने की गन्दी हरकतें अपने आप बंद हो जाएँगी | साथ ही यह भी हो कि इस नियम को तोड़ने वाले टीचर्स के खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही की जाएगी ..

प्रश्न -१ .इस गद्यांश के अनुसार प्राइवेट स्कूलों के अध्यापकों की कौन- कौन सी समस्याएँ हैं ? रजनी ने उनका क्या समाधान दिया?
प्रश्न -२. ट्यूशन के बारे में रजनी ने किस प्रस्ताव की बात की है? क्या इससे ज़बरदस्ती ट्यूशन रखने की समस्या का हल हो सकेगा?
प्रश्न ३ ट्यूशन के खिलाफ नियम बनने पर अपनी राय दीजिए ।

जामुन का पेड़ - कृश्न चंदर

1. “क्या मुश्किल है?” माली बोला, “अगर सुपरिटेन्डेंट साहब हुक्म दे, तो अभी पंद्रह बीस माली, चपरासी और क्लर्क लगाकर पेड़ के नीचे से दबे हुए आदमी को निकाला जा सकता है ।”

“माली ठीक कहता है,” बहुत से क्लर्क एक साथ बोल पड़े, “लगाओ जोर, हम तैयार हैं । ”

एक साथ बहुत से लोग पेड़ को उठाने को तैयार हो गए ।

“ठहरो !” सुपरिटेन्डेंट बोला, “ मै अंडर - सेक्रेटरी से पूछ लूँ ।”

सुपरिटेन्डेंट अंडर - सेक्रेटरी के पास गया। अंडर - सेक्रेटरी डिप्टी सेक्रेटरी के पास गया । डिप्टी सेक्रेटरी ज्वाइंट सेक्रेटरी के पास गया । ज्वाइंट सेक्रेटरी चीफ सेक्रेटरी के पास गया । चीफ सेक्रेटरी मिनिस्टर के पास गया। मिनिस्टर ने चीफ सेक्रेटरी से कुछ कहा । चीफ सेक्रेटरी ने ज्वाइंट सेक्रेटरी से कुछ कहा। ज्वाइंट सेक्रेटरी ने डिप्टी सेक्रेटरी से कहा। डिप्टी सेक्रेटरी ने अंडर - सेक्रेटरी से कहा। फ़ाइल चलती रही। इसी मे आधा दिन बीत गया ।

प्रश्न -१. पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी को निकालने के लिए माली ने क्या सुझाव दिया? क्यों ?
प्रश्न -२. क्लर्कों ने क्या कहा ? उन्हें किसने रोका ?
प्रश्न -३. काम करने के तरीके के विषय में अपने सुझाव दीजिए ।

2. हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेन्ट का सेक्रेटरी साहित्य-प्रेमी आदमी जान पड़ता था । उसने लिखा था, “आश्चर्य है, इस समय जब हम ‘पेड़ लगाओ’ स्कीम ऊँचे स्तर पर चला रहें है, हमारे देश मे ऐसे सरकारी अफसर मौजूद हैं जो पेड़ो को काटने का सुझाव देते है, और वह भी एक फलदार पेड़ को, और वह भी जामुन के पेड़ को, जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है। हमारा विभाग किसी हालत में इस फलदार वृक्ष को काटने की इजाजत नहीं दे सकता।”

प्रश्न -१. हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेन्ट के सचिव को क्या कहा गया है ? उसने क्या जवाब दिया ?

प्रश्न -२. हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेन्ट ने किस बात की इजाजत नहीं दी और क्यों ?

प्रश्न -३. इस अनुच्छेद में किस प्रकार की व्यवस्था पर व्यंग्य किया गया है ?

3. दूसरे दिन माली ने चपरासी को बताया ,चपरासी ने क्लर्क को ,क्लर्क ने हैड -क्लर्क को। थोड़ी ही देर में सेक्रेटेरियेट में यह अफवाह फ़ैल गई कि दबा हुआ आदमी शायर है। बस ,फिर क्या था । लोगों का झुण्ड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा । इसकी चर्चा शहर में फ़ैल गई और शाम तक गली -गली से शायर जमा होने शुरू हो गए। सेक्रेटेरियेट का लॉन भांति -भांति के कवियों से भर गया और दबे हुए आदमी के चारों और कवि सम्मेलन का-सा वातावरण उत्पन्न हो गया | सेक्रेटेरियेट के क्लर्क और अंडर सेक्रेटरी तक जिन्हें साहित्य और कविता से लगाव था, रुक गए। कुछ शायर दबे हुए आदमी को अपनी कविताएँ और दोहे सुनाने लगे । कई क्लर्क उसको अपनी कविता पर आलोचना करने को मजबूर करने लगे ।

प्रश्न -१. माली ने दूसरे दिन क्या सूचना दी ? उसका क्या परिणाम हुआ ?

प्रश्न -२. जब यह पता चला कि दबा हुआ आदमी शायर है तो लोगों ने क्या करना शुरू कर दिया?

प्रश्न -३. शायर के दबने के समाचार से सचिवालय में कैसा दृश्य उत्पन्न हो गया ?

4. दूसरे दिन जब फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आरी-कुल्हारी लेकर पहुँचे तो उनको पेड़ काटने से रोक दिया गया मालूम हुआ कि विदेश-विभाग से हुक्म आया था कि इस पेड़ को न काटा जाये कारण यह था कि इस पेड़ को दस साल पहले पीटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने सेक्रेटेरियेट के लॉन में लगाया था अब अगर यह पेड़ काटा गया, तो इस बात का काफी अंदेशा था कि पीटोनिया सरकार से हमारे सम्बन्ध सदा के लिए बिगड़ जाएँगे ।

“मगर एक आदमी की जान का सवाल है, ” एक क्लर्क चिल्लाया ।

“ दूसरी और दो राज्यों के संबंधों का सवाल है, “ दूसरे क्लर्क ने पहले क्लर्क को समझाया, “और यह भी तो समझो कि पीटोनिया सरकार हमारे राज्य को कितनी सहायता देती है - क्या हम उनकी मित्रता की खातिर एक आदमी के जीवन का भी बलिदान नहीं कर सकते ?”

प्रश्न -१. सरकारी कामकाज पर किए गए व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए ।

प्रश्न -२. पेड़ को काटने से फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट वालों को क्यों रोक दिया गया ?

प्रश्न -३ ”दो राज्यों के सम्बन्धों का सवाल है” - से लेखक का क्या तात्पर्य है ?

भारत माता - जवाहरलाल नेहरू

1. अक्सर जब मैं एक जलसे से दूसरे जलसे में जाता होता, और इस तरह चक्कर काटता रहता होता था, तो इन जलसों में मैं अपने सुनने वालो से अपने इस हिंदुस्तान या भारत की चर्चा करता। भारत एक संस्कृत शब्द है और इस जाति के परंपरागत संस्थापक के नाम से निकला हुआ है। मैं शहरों में ऐसा बहुत कम करता, क्योकि वहाँ के सुनने वाले कुछ ज्यादा सयाने थे और उन्हें दूसरें ही किस्म के गिज़ा की जरूरत थी। लेकिन किसानों से, जिनका नज़रिया महदूद था, मैं इस बड़े देश की चर्चा करता, जिसकी आज़ादी के लिया हम लोग कोशिश कर रहे थे और बताता कि किस तरह देश का एक हिस्सा दूसरें से जुदा होते हुए भी हिंदुस्तान एक था। मैं उन मसलो का जिक्र करता, जो उत्तर से लेकर दक्खिन तक और पूरब से लेकर पश्चिम तक, किसानों के लिए यक- साँ थे, और स्वराज्य का भी जिक्र करता, जो थोड़े लोगो के लिए नहीं, बल्कि सभी के फायदे के लिए हो सकता था।

प्रश्न -१. लेखक कहाँ जाता था और वहाँ किसकी चर्चा करता था ?
प्रश्न -२. नेहरु जी ने शहरी लोगों को ज्यादा सयाना क्यों कहा है ?
प्रश्न -३. नेहरु जी के लिए किसानों को हिंदुस्तान की एकता बताना क्यों जरुरी लगता था ?

2मै उन्हें सोवियत यूनियन में होने वाली अचरजभरी तब्दीलियों का हाल .
लेकिन जैसा मैंने ,यह काम आसान न था । भी बताता और कहता कि अमरीका ने कैसी तरक्की की है
इसकी वजह यह थी कि हमारे पुराने महाकाव्यों ने और । वैसा मुश्किल भी न था ,समझ रखा था
पुराणों की कथा - कहानियों नेऔर ,उन्हें इन देश की कल्पना करा दी थी ,जिन्हें वे खूब जानते थे ,
जो हिंदुस्तान के ,बड़े तीर्थों की यात्रा कर रखी थी-जिन्होंने हमारे बड़े ,हमेशा कुछ लोग ऐसे मिल जाते थे
जिन्होंने पि ,चारो कोनों पर है या हमे पुराने सिपाही मिल जातेछली बड़ी जंग में या और धावों के
सिलसिले में विदेशों में नौकरियाँ की थीं सन् तीस के बाद जो आर्थिक मंदी पैदा हुई थीउसकी वजह से ,
। दूसरे मुल्कों के बारे में मेरे हवाले उनकी समझ में आ जाते थे

प्रश्न -१.नेहरु जी को कौन सा काम मुश्किल लगता था लेकिन जो आसानी से हो गया ?
प्रश्न -२. भारतीयों को देश में दुनिया के बारे में जानकारी कैसे मिलती थी ?
प्रश्न -३. विदेशों के बारे में श्रोता लेखक की बातें किस प्रकार समझ लेते थे ? किसानों को पूरी दुनिया की बातें समझाने में किन अनुभवों ने सहयोग दिया ?

3. कभी ऐसा भी होता कि जब मैं किसी जलसे में पहुँचता, तो मेरा स्वागत " भारत माता की जय !" इस नारे से जोर के साथ किया जाता । मैं लोगों से अचानक पूछ बैठता कि इस नारे से उनका क्या मतलब है? यह भारत माता कौन है, जिसकी वे जय चाहते है मेरे सवाल से उन्हें कुतूहल और ताज्जुब होता और कुछ जवाब न बन पड़ने पर वे एक दूसरे की तरफ या मेरी तरफ देखने लग जाते । मैं सवाल करता ही रहता । आखिर एक हट्टे-कट्टे जाट ने, जो अनगिनत पीढ़ियों से किसानी करता आया था, जवाब दिया कि भारत माता से उनका मतलब धरती से है । कौन सी धरती? खास उनके गाँव की धरती या जिले की या सूबे की या सारे हिंदुस्तान की धरती से उनका मतलब है? इस तरह सवाल जवाब चलते रहते, यहाँ तक कि वे ऊबकर मुझसे कहने लगते कि मैं ही बताऊँ ।

प्रश्न -१. नेहरु जी ग्रामीणों से अक्सर क्या प्रश्न पूछते थे और क्यों ?
प्रश्न -२. लेखक के प्रश्न का क्या उत्तर मिला और वह किसने दिया ?
प्रश्न -३. अक्सर लोग नेहरु जी के प्रश्नों से क्यों ऊब जाते थे ?

4. मैं कोशिश करता और बताता कि हिंदुस्तान वह सब कुछ है, जिसे उन्होंने समझ रखा है, लेकिन वह इससे भी बहुत ज्यादा है। हिंदुस्तान के नदी और पहाड़, जंगल और खेत, जो हमें अन्न देते हैं, ये सभी हमें अज़ीज़ हैं । लेकिन आखिरकार जिनकी गिनती है, वे हैं हिंदुस्तान के लोग, उनके और मेरे जैसे लोग, जो इस सारे देश में फैले हुए हैं। भारत माता दरअसल यही करोड़ों लोग हैं, और "भारत माता की जय!" से मतलब हुआ इन लोगो की जय का मैं उनसे कहता कि तुम इस भारत माता के अंश हो, एक तरह से तुम ही भारत माता हो, और जैसे जैसे ये विचार उनके मन में बैठते, उनकी आँखों में चमक आ जाती , इस तरह, मानो उन्होंने कोई बड़ी खोज कर ली हो ।

प्रश्न -१. नेहरु जी ने किसानों को भारतमाता की क्या परिभाषा दी है ?
प्रश्न -२. लेखक ने भारतमाता की जय का क्या अर्थ बताया है ?
प्रश्न - ३. किसानों की आँखों में चमक क्या सुन कर आती थी ?

आत्मा का ताप- सैयद हैदर रज़ा

1. भले ही 1947 और 1948 में महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटी हों, मेरे लिए वे कठिन बरस थे पहले तो कल्याण वाले घर में मेरे पास रहते मेरी माँ का देहांत हो गया । पिताजी मेरे पास ही थे वे मंडला लौट गए मई 1948 में वे भी नहीं रहे विभाजन की त्रासदी की बावजूद भारत स्वंतंत्र था उत्साह था, उदासी भी थी जीवन पर अचानक जिम्मेदारियों का बोझ आ पड़ा हम युवा थे मैं पच्चीस बरस का था, लेखकों, कवियों, चित्रकारों की संगत थी हमें लगता था कि हम पहाड़ हिला सकते है और सभी अपने अपने क्षेत्रो में, अपने माध्यम में सामर्थ्य भर- बढ़िया काम करने में जुट गए देश का विभाजन, महात्मा गाँधी की हत्या क्रूर घटनाएँ थीं व्यक्तिगत स्तर पर, मेरे माता-पिता की मृत्यु भी ऐसी ही क्रूर घटना थी हमे इन क्रूर अनुभवों को आत्मसात करना था जम उससे उबर काम में जुट गए ।

प्रश्न -१. 1947 व 1948 की महत्वपूर्ण घटनाओं पर प्रकाश डालिए ?
प्रश्न -२. लेखक के साथ व्यक्तिगत रूप से कौन सी दुखद घटनाएँ घटीं ?
प्रश्न -३. लेखक किन-किन की संगत में था और उन्हें क्या अनुभव होता था ?

2. 1948 में मैं श्रीनगर गया, वहां चित्र बनाए ख्वाजा अहमद अब्बास भी वहीँ थे । कश्मीर पर कबायली आक्रमण हुआ, तब तक मैंने तय कर लिया था कि भारत में ही रहूँगा । मैं श्रीनगर से आगे बारामूला तक गया घुसपैठियों ने बारामूला को ध्वस्त कर दिया था। मेरे पास कश्मीर के तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख अब्दुल्ला का पत्र था, जिसमें कहा गया था कि यह एक भारतीय कलाकार हैं, इन्हें जहाँ चाहे वहां जाने दिया जाए और इनकी हर संभव सहायता की जाए। एक बार मैं बस से बारामूला से लौट रहा था या वहां जा रहा था तो स्थानीय कश्मीरियों के बीच मुझ पैंटधारी शहराती को देख कर एक पुलिसवाले ने मुझे बस से उतार लिया। मैं उसके साथ चल दिया । उसने पूछा, " कहाँ से आये हो ? नाम क्या है ? " मैंने बता दिया कि मैं रजा हूँ, बम्बई से आया हूँ । शेख साहब की चिट्ठी उसे दिखाई । उसने सलाम ठोंका और परेशानी के लिए माफ़ी मांगता हुआ चला गया ।

प्रश्न -१ 1948 ई में कश्मीर में क्या घटना घटी और उसके क्या परिणाम हुए ?
प्रश्न -२. लेखक के पास किसका पत्र था और उसमे क्या लिखा था ?
प्रश्न - ३. बारामूला से लौटते समय रजा के साथ कौन सी घटना घटी ?

3. श्रीनगर की इसी यात्रा में मेरी भेंट प्रख्यात फ्रेंच फोटोग्राफर हेनरी कार्तिए-ब्रेसा से हुई । मेरे चित्र देखने के बाद उन्होंने जो टिप्पणी की वह मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण रही है । उन्होंने कहा " तुम प्रतिभाशाली हो, लेकिन प्रतिभाशाली युवा चित्रकारों को ले कर मैं संदेहशील हूँ । तुम्हारे चित्रों में रंग है, भावना है, लेकिन रचना नहीं है । तुम्हे मालूम होना चाहिए कि चित्र इमारत की ही तरह बनाया जाता है - आधार, नींव, दीवारें, बीम, छत और तब जा कर वह टिकता है । मैं कहूँगा कि तुम सेजां का काम ध्यान से देखो।" इन टिप्पणियों का मुझ पर गहरा प्रभाव रहा । बम्बई लौटकर मैंने फ्रेंच सीखने के लिए अलयांस फ्रांसे में दाखिला ले लिया । फ्रेंच पेंटिंग में मेरी खासी रूचि थी, लेकिन मैं समझना चाहता था कि चित्र में रचना या बनावट वास्तव में क्या होगी ।

प्रश्न -१. श्रीनगर की यात्रा में लेखक की मुलाकात किससे हुई ? लेखक के लिए उसका क्या महत्व था ?

प्रश्न २.लेखक की चित्रकला में क्या कमी थी ? उसे दूर करने के लिए उसने क्या कोशिश की ?

प्रश्न-३. लेखक ने फ्रेंच क्यों सीखनी चाही? क्या आप भी कुछ नया सीखने की इच्छा रखते हैं ?

4. मैंने धृष्टता से उन्हें बताया कि 'बिन मांगे मोती मिले, मांगे मिले न भीख । ' मेरे मन में शायद युवा मित्रों को यह सन्देश देने की कामना है कि कुछ घटने के इन्तजार में हाथ पर हाथ धरे न बैठे रहो - खुद कुछ करो । जरा देखिये, अच्छे-खासे संपन्न परिवारों के बच्चे काम नहीं कर रहे, और जबकि उनमे तमाम संभावनाएं है । और यहाँ हम बैचेनी से भरे, काम किए जाते हैं । मैं बुखार से छटपटाता-सा, अपनी आत्मा, अपने चित्त को संतप्त किए रहता हूँ । मैं कुछ ऐसी बात कर रहा हूँ, जिसमें खामी लगती है । यह बहुत गजब की बात नहीं है, लेकिन मुझमे काम करने का संकल्प है । भगवद गीता कहती है, " जीवन में जो कुछ भी है, तनाव के कारण है । " बचपन, जीवन का पहला चरण, एक जागृति है । लेकिन मेरे जीवन का बम्बईवाला दौर भी जागृति का चरण ही था ।

प्रश्न -१. लेखक युवकों को क्या सन्देश देना चाहता है ?

प्रश्न -२. श्रीमद् भगवद्गीता का कर्म के बारे में क्या मत है ?

प्रश्न - ३. लेखक के अनुसार कौन से चरण जागृति के हैं और क्यों ?